Disclaimer: This is a work of fiction. Names, characters, businesses, places, events and incidents are either the products of the author's imagination or used in a fictitious manner. Any resemblance to actual persons, living or dead, or actual events is purely coincidental.

----------x----------

दयालू कामरेड

पुरोक्ति-

फौलादी पर्दे के नाम से जाने वाले विशाल देश की आर्थिक व्यवस्था केवल युद्धक अस्त्रों और तेल के निर्यात पर टिकी थी। युद्ध-उद्योग में उसका चिर प्रतिद्वंदी एक प्रजातांत्रिक राज्य था , तो तेल निर्यात के क्षेत्र क्षेत्र में खाड़ी देश उसके बड़े प्रतिद्वंदी थे। इस वामपंथी देश के तानाशाह शासक को दयालू कामरेड कहा जाता था। पिछले हफ्ते दयालू कामरेड ने तेल निर्यात बढ़ाने के सबब से देश के शीर्षस्थ अधिकारियों की बैठक बुलाई थी। दयालू कामरेड व्यापार में स्वस्थ प्रतिद्वंदिता के पोषक नहीं थे। इस लिए उनकी बैठक में देश की सीक्रेट सर्विसेज़ के कूटनीतिक और युद्धनीतिक विशेषज्ञ ही आमंत्रित थे। दयालु कामरेड ने इन सभी को , देश का तेल निर्यात बढ़ाने की युक्ति ढूँढने का दायित्व सौंपा था।

पिछले हफ्ते की सीक्रेट सर्विसेज़ की मीटिंग में एक विष और जैविक युद्ध का विशेषज्ञ भी था। आज यह विशेषज्ञ कामरेड को अपनी युक्ति के बारे में बताने आया था। यह अतिगोपनीय मीटिंग थी। वैज्ञानिक ने कहना शुरू किया "सर, खड़ी देशों के कुल तेल निर्यात का पांचवा भाग केवल "अल्फा" देश को जाता है। यदि खाई देशों के "अल्फा" के तेल निर्यात को किसी प्रकार बंद कर दिया जाय तो, विश्व तेल आपूर्ति में हमारा हिस्सा बढ़ सकता है"

"किन्तु यह होगा कैसे?" दयालु कामरेड के स्वर में चिड़चिड़ाहट थी।

"उसी का प्लान तो लेकर आया हूँ सर। किन्तु यह बहुत ही गोपनीय है" वैज्ञानिक की आँखों में सफलता की चमक थी।

वैज्ञानिक की आँखों में घूरते हुए कामरेड ने कामरेड ने अपनी मेज पर लगे लाल बटन को दबाया। मीटिंग टेबल के चारो ओर एक शीशे का केबिन सा बन गया। यह केबिन बुलेटप्रूफ और साउंडप्रूफ था। उसके अंदर कोई एलेक्ट्रानिक यंत्र भी सक्रिय नहीं रहता था। कामरेड और वैज्ञानिक के बीच की वार्ता का भान किसी तीसरे व्यक्ति के लिए असंभव था।

विष-वैज्ञानिक ने कहन शरु किया। कामरेड पूरे मनोयोग से सुन रहे थे। बात समाप्त होने पर कामरेड आश्वस्त दिखे। मीटिंग समाप्त होने पर ग्लास केबिन हट गया। कामरेड ने कहा "तुम्हारी युक्ति सोलहो आने दुरुस्त है। किन्तु यह बात लीक नहीं होनी चाहिए"

वैज्ञानिक ने प्रसन्न होते हुए कहा "लीक कैसे होगी सर यह बात केवल हम दोनों के बीच ही है"

कामरेड खुश हुए। उन्होने सेलेब्रेट करने के लिए अपनी ड्राज से दो गिलास निकाले। उनमे वोदका ढाल कर एक जाम वैज्ञानिक को दिया और एक स्वयं पीने लगे। वैज्ञानिक गदगद था कि दयालू कामरेड को उनकी युक्ति जंच गई।

वैज्ञानिक कामरेड से उच्चस्थ पद की आशा में झूलता हुआ अपने अपार्टमेंट में पहुँच कर पलंग पर लेट कर, टी वी के चैनल सर्फ करने लगा। एकाएक उसकी आँखों के सामने अंधेरा छाने लगा। वैज्ञानिक भयाक्रांत हो उठा। उसे एहसास हुआ किसी वह अपने ही बनाए घातक विष का शिकार बन गया। उसकी पथराती आँखों में वोदका का पेग देते हुए दयालू कामरेड का चेहरा घूम गाय। उसके हाथ से टी वी का रिमोट छूट कर ज़मीन पर गिर पड़ा।

टी वी पर फ्लैश न्यूज़ आ रही थी "देश के शीर्षस्थ वैज्ञानिक का दिल का दौरा पड़ने से अचानक मृत्यु हो गई। वह अपने अपार्टमेंट में मृत पाये गए। वैज्ञानिक के सम्मान में राष्ट्र में तीन दिन राष्ट्रीय शोक मनाया जाएगा"

----------x----------

दृश्य 1 - 8 नवंबर 2019 – अल्फा देश के बीटा प्रांत के गामा शहर की एक जैविक प्रयोगशाला में कार्यरत 'फौलादी पर्दे' की नागरिक महिला वैज्ञानिक के पर्सनल मोबाइल पर उसकी माँ के मोबाइल से वीडियो काल आती है। महिला खुशी से 'यस' का बटन पुश करके उत्साह से पूंछा "कैसी हो मम्म..?"

उसके आगे के शब्द एक चीख में डूब गए। वीडियो में उसकी माँ और उसकी दोनों बेटियाँ अर्धनग्न अवस्था में बंधक दिखे। उसकी बेटियाँ किसी से गिड़गिड़ा कर दया की भीख माँग रही थीं। माँ भयभीत किन्तु संयत थीं। वह वामपंथी डिक्टेटरशिप की क्रूरता से परिचित थीं और झेल चुकी थी। महिला वैज्ञानिक कोई प्रतिक्रिया करे, तब तक मोबाइल स्क्रीन पर एक भयानक चेहरा उभरा। उसके मुँह पर नृशंस मुस्कान थी। उसको देख कर महिला की हड्डियाँ भी काँप गयी। वह लौह-पर्दे का सबसे कुख्यात 'टार्चर स्पेसलिस्ट' का चेहरा था। उसने महिला वैज्ञानिक को निर्देश देना प्रारम्भ किया। निर्देश सुन कर महिला पर मौत की सर्दगी छा गई।

महिला के पास निर्देश मानने के अलावा कोई चारा नहीं था। निर्देश मानने पर उसकी मृत्यु निश्चित थी। परंतु न मानने पर उसको और उसके परिवार को तिल-तिल कट कर, यातना पूर्वक मृत्यु झेलनी होगी।

दृश्य 2 - अगले दिन वह महिला सामान्य रूप से प्रयोग शाला में आई। उस समय वह कोरोना वाइरस के सबसे उग्र और संक्रामक स्ट्रेन पर कार्य कर रही थी। जोखिम भरा कार्य था। वह शून्य भाव से कल्चर बाक्स खोलती है। एक उंगली से अति संक्रामक और घातक कोरोना वायरस का कल्चर उंगली पर लेकर अपने फेस मास्क के भीतर अपनी नाक के नथुनों के अंदर लगा लेती है। इसके बाद वह वैज्ञानिक काँपते हुए पैरों से काफी कैफे की ओर चल देती है। महिला वैज्ञानिक के सहकर्मी उसे काफी आफ़र करते हैं। एक बूट की तरह वह काफी का प्याला ले लेती है। हमेशा

खिलखिलाने वाली महिला का पथराया चेहरा देख कर सहकर्मी कुशल क्षेम पूंछते हैं। महिला नजला जुकाम होना बताती है।

इस घटना के हफ्ते भर बाद वैज्ञानिक महिला तेज बुखार और खांसी से अस्पताल में भर्ती हुई। डाक्टर ने पाया कि महिला को निमोनिया है। 24 घंटे में महिला वेंटिलेटर पर आ गई और अगले दिन उसकी मृत्यु हो गई।

पोस्टमार्टम में महिला की मृत्यु का कारण 'कोरोना वायरस निमोनिया' पाया गया।

कोरोना वायरस लैब से निकल कर जनरल पापुलेशन में आ चुका था। इन दस दिनों में महिला वैज्ञानिक के संपर्क में आए , उसके सहकर्मी वैज्ञानिको के अलावा कैफे स्टाफ , बस के सहयात्री , माल के सेल्समैन, महिला के हास्टल के कर्मचारी आदि हजारों लोग कोरोना वायरस से संक्रमित हो चुके थे। कोरोना फैल चुका था। अस्पताल में वेंटिलेटर कम पड़ने लगे। पूरे बीटा प्रांत में मौत का तांडव होने लगा।

कुछ दिनों तक सरकार ने इसे गुप्त रखने का प्रयास किया। किन्तु जल्द ही जब मृतकों की बड़ी संख्या को पब्लिक की नज़रों से छुपाना असंभव होगया। सरकार को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर घोषित करना पड़ा कि देश कोरोना महामारी के चपेट में है।

देश की स्वीकारोक्ति तक कोरोना विश्व के लगभग हर देश में पहुँच चुका था , यानी कोरोना अब विश्वव्यापी महामारी का रूप ले चुका था।

कोरोना के विस्तार को रोकने के लिए अल्फा को पूरी तरह से आइसोलेट कर दिया गया। कोई भी व्यापारिक जहाज़ अल्फा नहीं जा रहा था। खाड़ी देशों से अल्फा को तेल कि आपूर्ति भी रुक गई। बीस प्रतिशत निर्यात एकाएक घाट जाने से खाड़ी देश के तेल की कीमत लुढक गई। महामारी खाड़ी देशों में भी पहुँच चुकी थी। विश्व के सभी देशों ने खाड़ी से आयात बंद कर दिया। ऐसे समय में वैश्विक बाज़ार में तेल आपूर्ति करने वाला केवल एक देश ही बचा जो महामारी से अभी तक अछूता था। यह देश था 'फौलादी पर्दा'।

पश्चादोक्ति या उपसंहार-

महामारी के एक साल के अंदर ही 'फौलादी पर्दे' की अर्थव्यवस्था आने वाले दस वर्षों के लिए सुदृढ़ हो चुकी थी। फरवरी 2021 में फौलादी पर्दे की राजधानी में एक भव्य आयोजन हुआ। इस आयोजन में वर्ष 2020 की आर्थिक सफलता का जश्न मनाया गया। इस जलसे में एक प्रतिमा का अनावरण किया गया। यह प्रतिमा 40 वर्षीय विष एवं जैव-वैज्ञानिक की थी। इस वैज्ञानिक की 3 नवंबर 2019 को एकाएक हार्ट अटैक पड़ने से आकस्मिक मृत्यु हो गई थी। दयालू कामरेड ने वर्ष 2020 की आर्थिक सफलता का सूत्रधार इस वैज्ञानिक को बताया और देश का उद्धारक कह कर सलामी दी।

****